श्री शिव जी आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ।।ॐ जय शिव...।।

एकानन चतुरानन पँचानन राजै ।
हंसासन गरूड़ासन, वृषवाहन साजै ।।ॐ जय शिव...।।

दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ।।ॐ जय शिव...।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चंदा, भाले शुभ कारी ।।ॐ जय शिव...।।

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक, ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।।ॐ जय शिव...।।

कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूलधरता ।
सुख कर्ता दुःख हर्ता, जगपालन करता ।।ॐ जय शिव...।।

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका ।।ॐ जय शिव...।।

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठ दर्शन पावत रुचि-रुचि भोग लगावत,
महिमा अति भारी ।।ॐ जय शिव...।।

त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोई जन गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे ।।ॐ जय शिव...।।

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव ।।ॐ जय शिव...।।